UNIT-3

EPC-4 Unit-3 का EPC-4

Unit-3 — Paper-I

1. Describe the Role of Teacher Education Programmes for Developing as a Teacher.

प्रश्न-01. एक शिक्षक के निर्माण/विकास में अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम की भूमिका का वर्णन करें।

उत्तर

प्रश्न-I अध्यापक-शिक्षा का अर्थ व परिभाषा?

(Meaning and Definition of Teacher education Programmes.)

शिक्षा शोध के (मुनरो) के विश्वकोश (Munroe's Encyclopeadia of Edication Research) ने अध्यापक-शिक्षण - पद को लिए व्यक्ति को तैयार करती है, परन्तु वह शैक्षिक योग्यताएँ संस्थानों द्वारा व्यावसायिक विभिन्न कोर्सों और अन्य अनुभवों पर आधारित होता है और शिक्षक को अन्य सेवाओं हेतु व्यक्ति को तैयार करने में पहले ही, सेवा काल बनाए जाते हैं। ये कार्यक्रम अध्यापकों और कार्यकर्ताओं, सामान्य दर्शन शिक्षा के उद्देश्यों में शिक्षा करते हैं और उनके लिए लागू होते हैं।

जो अध्यापन व्यवसाय में प्रवेश करने से पूर्व और पश्चात् दोनों में सम्पन्न करते अर्थात् विश्लेषण-व्याख्या को केन्द्र में रखते हैं। अधोलिखित विश्लेषण अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डालता है आगे उसकी भूमिका को स्पष्ट करता है :-

1. शिक्षण की विभिन्न विधियों का ज्ञान :- (Knowledge of different methods of teaching) :- शिक्षण-शिक्षा यानि अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम विभिन्न शिक्षण विधियों का ज्ञान प्रदान करती है। अध्यापक विभिन्न विधियों को भली-भांति समझ कर किसी एक उचित विधि का वास्तविक स्थिति में अध्यापन हेतु प्रयोग करने में सक्षम हो जाते हैं। बाद में अपने परिश्रम से अध्यापक विभिन्न विधियों पर अनुसन्धान कर इन विधियों का उचित समन्वय या नई विधियों का सृजन कर सकता है। इस ज्ञान के अभाव में अध्यापक शून्य होता है और अध्यापन कार्य को कुशलतापूर्वक करने में असफल रहता है।

2. शिक्षा-मनोविज्ञान का ज्ञान :- (Knowledge of Education phychalogy) :- अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम में, शिक्षा-मनोविज्ञान का ज्ञान दिया जाता है। इस विषय में, अध्यापक विद्यार्थी के विकास, युवाओं की समस्याएं, होनहार एवं पिछड़े बच्चे, शिक्षण के उसके नियम आदि से सम्बन्धित तत्व सीखता है। मनोविज्ञान के इन पक्षों का ज्ञान अध्यापक को [illegible] एक भावी अध्यापक सफलतापूर्वक शिक्षण कर सकते।

Scanned with CamScanner

का प्रयत्न करता है और उसके अनुरूप ही शिक्षण विधि अपनाता है जो शिष्य के लिए लाभप्रद होता। इस उदाहरण के तौर पर कक्षा में पिछड़े बच्चे होते हैं। अध्यापक को उनकी अपेक्षा नहीं करनी चाहिए बल्कि उनकी समस्या के कारणों और उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि पर विचार कर उसके समाधान पर प्रकाश डालना चाहिए। इस तरह ही वह कक्षा में सही कर सकता है जब उसे अध्यापक-प्रशिक्षण दिया जाए।

3. अध्यापक-शिक्षा, दर्शन-शास्त्र का ज्ञान होता है :- (Teacher Education programme teacher about philosophy and sociology) :- इससे अध्यापक को विभिन्न दर्शन व उनके सैद्धांतिक-महत्व सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होता है। यह सामुदायिक जीवन, मानसिक द्वंद और संस्कृति की आवश्यकताओं और महत्व आदि से अवगत होता है। उसे बालक को सफल व्यक्ति बनाने हेतु मुख्य उद्देश्यों एवं तथ्यों का ज्ञान होता है।

4. शिक्षण = योग्यता (Competency of Teaching) :-

अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम, शिक्षक को शिक्षण योग्यता एवं कुशलता प्राप्त कराने में सहायक है। यहां में अध्यापक Micro-Teaching, शिक्षण = कौशल आदि का भाव प्राप्त करता है और अध्यापन अभ्यास द्वारा इन विभिन्न कौशलों को अर्जित करते हैं। इन विभिन्न कौशलों के अभ्यास द्वारा इन्हें श्रेष्ठता प्राप्त कराता है।

Scanned with CamScanner

(3)

5. दृश्य-श्रव्य साधनों का ज्ञान :- (Knowledge of Audio-Visual Aids)

अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम में अध्यापक को दृश्य-श्रव्य साधनों, दृश्य एवं श्रव्य साधनों का पूर्ण ज्ञान दिया जाता है। यह भली-भांति समझने लगता है कि एक निश्चित उपविषय को पढ़ाने के लिए उसे किस प्रकार के साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए और कैसे अपने अध्यापन को रुचिपूर्ण बनाया जाना चाहिए? इससे वह कक्षा अध्ययन को उपेक्षा रहित बना सकता है। अध्यापन यदि दीर्घ समय तक मौखिक रूप से किया जाए तो वह और अरुचिपूर्ण होगी और परिणामस्वरूप प्रभावी नहीं होगी। अतः दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग प्रभावशाली अध्यापन और अच्छे परिणामों में परिणीत होगा।